CHAPTER 18, अक्क महादेवी

PAGE 172, प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ

11:1:18:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ:1

1. लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं - इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।

उत्तर : इंद्रियां सबसे महत्वपूर्ण तत्व है जिसके बिना मनुष्य की परिकल्पना असंभव है। इसके बिना मानव केवल पशु है क्योँकि यह इंद्रियां मनुष्य को दिव्य बनाती हैं और शीर्ष पर पहुंचती हैं। यही इंद्रियां हैं जो मनुष्य को इतना नीचा गिरा देती है कि वह कभी उठ भी नहीं पता। इन्द्रियां जीवन पथ से भटकती है उनका काम बस खुद को संतुष्ट करना है। इंद्रियां वासना के जाल में उलझाकर मानव को लक्ष्य-पथ से भटकाती रहती हैं। विशेष रूप से ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में इंद्रियाँ सबसे बड़ी बाधा बन जाती हैं। यह साधक को संसार के मोह में उलझाए रखती है और उसे भक्ति के मार्ग की ओर नहीं बढ़ने देती है। इसलिए यह बिल्कुल सच है कि लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती है।

11:1:18:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ:2

2. ओ चराचर! मत चूक अवसर - इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : भारतीय दर्शन के अनुसार मानव-जन्म मिलना सौभाग्य की बात है। जन्म-मरण एक चक्र है जो निरंतर चलता रहता है। इस चक्र से मुक्ति का एकमात्र उपाय भगवान् की भक्ति है। उपरोक्त पंक्ति में, कवयित्री संसार के प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर भक्ति करने के लिए प्रेरित करती है। कवियित्री ने मानव जीवन का लाभ उठाने को कहती है। वह मानव जीवन को भगवान् की भक्ति में लीन करने को कहती है। यदि मनुष्य इंद्रियों के जाल में फसेगा तो सांसारिक मोह माया से बाहर नहीं निकल पायेगा और भगवान् की प्राप्ति नहीं कर पायेगा। अतः समय रहते इस मानव लाभ उठा लेना चाहिए।

11:1:18:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ:3

3. ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का प्रयोग किया गया है। ईश्वर

और उसके साम्य का आधार बताइए।

उत्तर : जूही के फूल का चित्रण भगवान के लिए दिया गया है। ईश्वर और जूही के फूल के बीच समानता का आधार इसकी सुंदरता और खुशबू है। जूही के फूल बहुत छोटे, बहुत नरम और मीठी सुगंध के वाले होते हैं। ठीक उसी प्रकार भगवान भी सूक्ष्म, कोमल और मीठे गुण के साथ होते हैं।

11:1:18:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:4

4. अपना घर से क्या तात्पर्य है? इसे भूलने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर : यहाँ "अपना घर" मोह-माया से ग्रसित सामान्य जीवन को संदर्भित करता है। व्यक्ति इस घर के मोह-माया के जाल में फंस जाता है और भगवान को पाने के लक्ष्य से पीछे रह जाता है। कवयित्री इस जीवन को छोड़ने की बात करती है क्योंकि भगवान् की प्राप्ति के लिए इस मोह-माया से बने जीवन का त्याग करना होगा। यह भगवान की भक्ति में सबसे बड़ी बाधा

है। अपने घर से निकलने के बाद ही भगवान के घर में कदम रखा जा सकता है।

11:1:18:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:5

5. दूसरे वचन में ईश्वर से क्या कामना की गईं है और क्यों?

उत्तर : दूसरे वचन में, कवयित्री ईश्वर से चाहती है कि ईश्वर उनसे सब कुछ छीन ले, इस शब्द में ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना है। कवयित्री सांसारिक चीजों को पूरी तरह से छोड़ना चाहती है। ऐसे छोड़ना चाहती है की उसे खाने को भी न मिले और भीख मांगना पड़े। इसके बाद भी अगर कोई भीख दे तो वह नीचे गिर जाए । जब ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी तो उसका आंतरिक अहंकार नष्ट हो जाएगा और वह ईश्वर भक्ति के लिए समर्पित हो जाएगी।

PAGE 172, प्रश्न - अभ्यास - कविताकेआसपास

11:1:18:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेआसपास:1

6. क्या अक्क महादेवी को कन्नड़ की मीरा कहा जा सकता है? चर्चा करें।

उत्तर : हालाँकि दो बहुत श्रेष्ठ लोगों की तुलना करना कोई आसान काम नहीं है, लेकिन अगर आप अक्क महादेवी और मीरा की जीवन-यात्रा को देखें, तो भी दोनों के जीवन में बहुत समानता है। दोनों लोगो ने भगवान् को अपना आराध्य और गुरु मन था। दोनों ने अपना वैवाहिक जीवन त्याग कर भगवान् की भक्ति में लीन होना चुना था। दोनों ने अपने समय में प्रचलित सामाजिक मर्यादाओं को तोडा था। दोनों के लिखे पद तथा पदों के भाव एक दूसरे से मिलते है। दोनों लोगों ने सांसारिक मोह माया छोड़कर प्रभु भक्ति में लीं होना चाहती थी। अतः हम यह कह सकते है कि अक्कमहादेवी कन्नड़ की मीरा थीं।